चौधरी देवी लाल

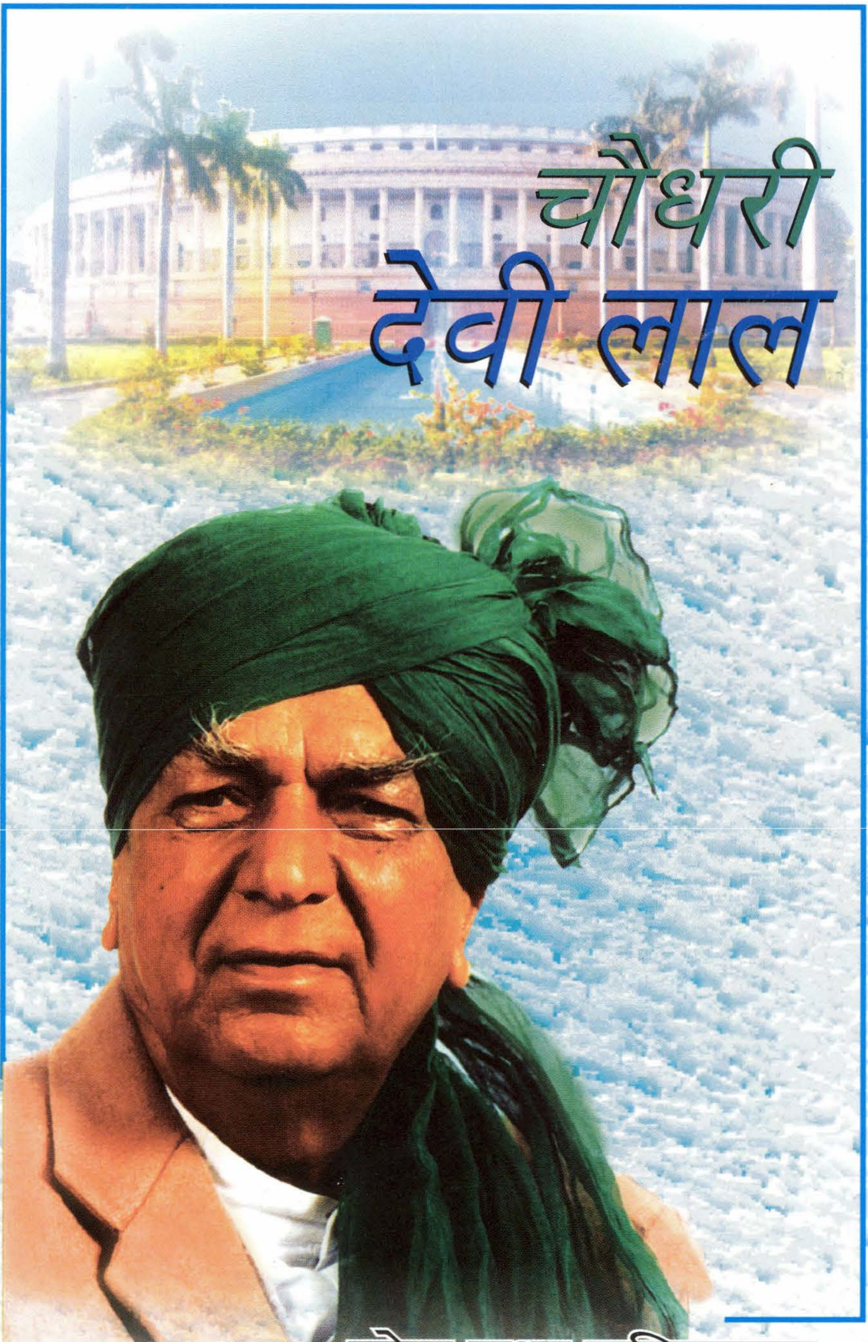

लोक सभा सचिवालय
नई दिल्ली
सितम्बर 2003

चौधरी देवी लाल

लोक सभा सचिवालय
नई दिल्ली
सितम्बर 2003

9 (3)–लार्डिस (एल सी)/2003

© 2003 **लोक सभा सचिवालय**

लोक सभा के प्रक्रिया तथा कार्य संचालन नियम (दसवां संस्करण) के नियम 382 के अंतर्गत प्रकाशित तथा जैनको आर्ट इंडिया, 13/10, डब्ल्यू.ई.ए., सरस्वती मार्ग, करोल बाग, नई दिल्ली-110 005 द्वारा मुद्रित।

आमुख

भारत के पूर्व उप-प्रधान मंत्री और वयोवृद्ध स्वतंत्रता सेनानी, चौधरी देवी लाल एक दृढ़ विश्वास वाले नेता थे। अपने अनुयायियों द्वारा प्यार और सम्मान से 'ताऊ' कहकर पुकारे जाने वाले चौधरी देवी लाल का छह दशकों से भी अधिक लम्बा और उतार-चढ़ाव वाला राजनैतिक जीवन रहा। वह एक किसान के बेटे थे और उन्होंने अपनी राजनैतिक यात्रा राष्ट्रपिता महात्मा गांधी द्वारा शुरू किए गए सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान स्वतंत्रता संघर्ष में भाग लेकर आरम्भ की। वह 1948 में डिस्ट्रिक्ट बोर्ड, हिसार के सदस्य बने। वह तीन बार पंजाब विधान सभा के और पांच बार हरियाणा विधान सभा के सदस्य रहे तथा उन्हें संसद के दोनों सदनों का सदस्य बनने का भी गौरव प्राप्त हुआ। वह दो बार हरियाणा के मुख्यमंत्री बने और 1989 में भारत के उप-प्रधान मंत्री तथा कृषि और पर्यटन मंत्रालय के प्रभारी बने। वह मूलत: एक किसान नेता थे जिनका ग्रामीण क्षेत्रों में ठोस आधार था। वह सदैव जन साधारण के हिमायती रहे।

कृतज्ञ राष्ट्र चौधरी देवी लाल के बलिदान और सेवाओं के लिए 25 सितम्बर, 2003 को उनका सम्मान कर रहा है जब माननीय अध्यक्ष श्री मनोहर जोशी संसद भवन परिसर में उनकी प्रतिमा का अनावरण करेंगे। संयोगवश इसी दिन उनका 89वां जन्म दिवस भी है।

चौधरी देवी लाल की प्रतिमा श्री राजेश भंडारी द्वारा बनाई गई है और यह 12 फुट 6 इंच ऊंची है। यह प्रतिमा चौधरी देवी लाल स्मारक न्यास, नई दिल्ली द्वारा भेंट की गई है।

इस अवसर पर लोक सभा सचिवालय यह पुस्तिका प्रकाशित कर रहा है जिसमें चौधरी देवी लाल का संक्षिप्त जीवनवृत्त और उनके कुछ चुने हुए चित्र दिए गए हैं।

हम लोक सभा के माननीय अध्यक्ष, श्री मनोहर जोशी के आभारी हैं जिन्होंने गहरी रुचि लेकर और मूल्यवान मार्गदर्शन देकर यह पुस्तिका प्रकाशित करने में हमारी सहायता की है और प्रतिमा का अनावरण करने के लिए समय निकाला है। हम प्रतिमा भेंट करने के लिए चौधरी देवी लाल स्मारक न्यास का भी धन्यवाद करते हैं। यह पुस्तिका चौधरी देवी लाल के प्रति विनम्र श्रद्धांजलि है। हम आशा करते हैं कि यह प्रकाशन सभी के लिए उपयोगी और ज्ञानप्रद सिद्ध होगा।

नई दिल्ली
25 सितम्बर, 2003

गुरदीप चन्द मलहोत्रा
महासचिव
लोक सभा

विषय-सूची

पृष्ठ

आमुख .... (i)

चौधरी देवी लाल–जीवनवृत्त

प्रारम्भिक जीवन 1

स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेना 2

महात्मा गांधी का प्रभाव 3

भारत छोड़ो आन्दोलन और देवी लाल 4

किसान आन्दोलन 4

जनप्रतिनिधि के रूप में 5

भ्रष्टाचार के विरुद्ध अभियान 5

हरियाणा राज्य का गठन 6

कांग्रेस में पुन: प्रवेश और कांग्रेस छोड़ना 7

हरियाणा के मुख्य मंत्री के रूप में 8

एक किसान नेता 9

संसद में 9

एक राष्ट्रीय नेता के रूप में आविर्भाव 9

उप-प्रधान मंत्री के पद तक पहुंचना 10

श्रद्धांजलि 11

चित्रात्मक झांकी 15

चौधरी देवी लाल

-जीवनवृत्त-

भारत के पूर्व उप-प्रधानमंत्री चौधरी देवी लाल एक ऐसे नेता थे जिन्हें देश के किसानों के हितों का आजीवन समर्थन करने के लिए याद किया जाएगा। अपनी पीढ़ी के अनेक नेताओं की तरह उन्होंने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के आह्वान पर अपनी पढ़ाई बीच में छोड़कर भारत के स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय रूप से भाग लिया। वह सविनय अवज्ञा आन्दोलन और भारत छोड़ो आन्दोलन में कूद पड़े तथा उन्हें तीन बार जेल जाना पड़ा। उन्होंने किसानों की बेहतरी और काश्तकारों के अधिकारों की रक्षा के लिए भी आन्दोलन छेड़ा। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् वह 1952, 1959 और 1962 में पंजाब विधान सभा के लिए चुने गए और 1966 में जब पंजाब में से हरियाणा राज्य का गठन हुआ तो उसके बाद वह पांच बार हरियाणा विधान सभा के सदस्य बने। बाद में वह सातवीं और नौवीं लोक सभा के लिए भी निर्वाचित हुए। 1989 में नौवीं लोक सभा के लिए चुने जाने पर चौधरी देवी लाल को भारत का उप-प्रधानमंत्री बनने का गौरव प्राप्त हुआ। 6 अप्रैल, 2001 को जब उनका स्वर्गवास हुआ तो उस समय वह राज्य सभा के सदस्य थे। कुशाग्र बुद्धि और सहृदयता के दुर्लभ गुणों के कारण वह अपने मित्रों और विरोधियों के बीच समान रूप से प्रिय थे। सिद्धान्तों के प्रति उनकी आस्था, लोकतांत्रिक मूल्यों और गांधीवादी विचारधारा में उनके अटूट विश्वास और सर्वोपरि, आम जनता के प्रति उनके स्नेह और प्रेम ने उन्हें एक अद्वितीय नेता बना दिया था। उनके बहुमुखी व्यक्तित्व का सर्वाधिक आकर्षक पहलू उनकी सादगी थी। लोग, विशेषरूप से किसान उन्हें बहुत अधिक सम्मान देते थे। उनके अनुयायी उन्हें स्नेहपूर्वक "ताऊ" कहकर बुलाते थे। देश के लोगों के प्रति उनकी सेवाएं काफी सराहनीय और प्रशंसनीय रही हैं। उन्होंने अपनी सादगी, सरलता और लोकतांत्रिक मूल्यों में अपने अडिग विश्वास से देश के करोड़ों लोगों का दिल जीत लिया।

प्रारम्भिक जीवन

चौधरी देवी लाल का जन्म 25 सितम्बर, 1914 को हरियाणा के सिरसा जिले में चौटाला गांव के निकट तेजा खेड़ा में एक मध्यवर्गीय किसान परिवार में हुआ था। उनकी माता का नाम श्रीमती सुगना देवी और पिता का नाम चौधरी लेख राम था। उनकी माता, श्रीमती सुगना देवी, एक धार्मिक, मृदुभाषी और उदार महिला थीं। उनका देहांत 1925 में अल्पायु में उस समय हो गया जब देवी लाल सिर्फ ग्यारह वर्ष के थे। बाद के वर्षों में, देवी लाल ने अपनी माता के अधिकांश गुणों को ग्रहीत किया।

वह अपने पांच भाइयों और बहनों में तीसरे स्थान पर थे। चौधरी साहब राम और श्रीमती धापन देवी उनसे बड़ी थीं तथा श्रीमती रुक्मिणी देवी और श्रीमती परमेश्वरी देवी उनसे छोटी थीं। सभी लोग पारम्परिक रूप से एक संयुक्त परिवार में रहते थे। 1919 में चौधरी लेख राम अपना परिवार लेकर चौटाला आ गए जो तेजा खेड़ा से बहुत दूर नहीं था। सात वर्ष की उम्र में चौधरी देवी लाल का दाखिला राजकीय प्राथमिक विद्यांलय, चौटाला में कराया गया। प्रारम्भ से ही वह एक होशियार छात्र थे और खेलकूद में उनकी गहरी रुचि थी। बाल्यावस्था से ही उनका शरीर सुगठित था। उनका कद लम्बा, नाक तीखी और माथा चौड़ा था। उनकी स्पष्टवादिता और नेतृत्व के गुण उनके आरम्भिक जीवन के दौरान खेलकूद के क्षेत्र में निखरकर सामने आए।

प्राथमिक शिक्षा पूरी होने पर उन्हें राजकीय विद्यालय, डबवाली में भेजा गया जहां से उन्होंने आठवीं कक्षा उत्तीर्ण की। उन्होंने हरभगवान मेमोरियल स्कूल, फिरोजपुर और देव समाज हाई स्कूल, मोगा में भी पढ़ाई की।

स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेना

देवी लाल की युवावस्था में, भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन की भावना जोर पकड़ रही थी। जब देवी लाल स्कूल में थे तो राष्ट्रीय स्तर पर होने वाली घटनाओं पर उनकी पैनी नजर होती थी और ट्रिब्यून, मिलाप, प्रताप और वन्दे मात्रम जैसे विभिन्न समाचार-पत्रों के जरिए जानकारी प्राप्त किया करते थे। उस समय की घटनाओं ने देवी लाल के विचारों को प्रभावित किया और उनमें राष्ट्रीयता की भावना कूट-कूट कर भर दी। उन्होंने अपने मित्रों के साथ दिसम्बर, 1929 में लाहौर में रावी नदी के किनारे आयोजित किये गये कांग्रेस के ऐतिहासिक सत्र में भाग लिया और ''पूर्ण स्वराज'' हेतु पारित किए गए संकल्प के साक्षी बने। आगे वह अपना ध्यान अपनी पढ़ाई पर केन्द्रित नहीं रख सके क्योंकि राष्ट्रीय आन्दोलन की भावना हर वक्त उनके दिलोदिमाग पर हावी रहती थी। लगभग इसी समय महात्मा गांधी ने सविनय अवज्ञा आन्दोलन छेड़ दिया। उन्होंने छात्रों से ''स्कूल/कालेज छोड़ो और स्वतंत्रता आन्दोलन में भाग लो'' का आह्वान किया। देवी लाल ने अपनी पढ़ाई छोड़ दी और राष्ट्रीय आन्दोलन में कूद पड़े। देवी लाल के पिता चौधरी लेख राम पुत्र द्वारा पढ़ाई बीच में छोड़ देने से खुश नहीं थे। उन्होंने उनको अपनी पढ़ाई जारी रखने के लिए मनाने की कोशिश की। जब देवी लाल पर पिता की बातों का कोई प्रभाव नहीं पड़ा तो उनके पिता ने उनका विवाह हरकी देवी से कर दिया किन्तु इस विवाह ने भी स्वतंत्रता आन्दोलन में भाग लेने की उनकी भावना को कमजोर नहीं पड़ने दिया।

देवी लाल को 1930 में, ब्रिटिश सरकार के कट्टर समर्थक, कालूवाना गांव के जमींदार लूना राम जाखड़ के विरुद्ध संघर्ष छेड़ने के लिए पहली बार कारावास में भेजा गया। कांग्रेस के स्थानीय नेताओं के सहयोग से उन्होंने उसकी ज्यादतियों को चुनौती दी और सरकार द्वारा कांग्रेस की गतिविधियों पर लगाए गए प्रतिबंधों को मानने से इनकार कर दिया। उन्हें दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 108 के अंतर्गत गिरफ्तार किया गया और 8 अक्तूबर, 1930 को मजिस्ट्रेट ने उन पर 5,000 रुपए का जुर्माना किया अथवा उसके न दिए जाने की स्थिति में एक वर्ष के कठोर कारावास की सजा सुनाई। देवी लाल ने जुर्माना देने से मना कर दिया और कारावास का विकल्प चुना। उन्हें पहले जिला कारागार, हिसार में रखा गया और बाद में बोस्त्राल जेल, लाहौर भेजा गया। उन्हें मार्च, 1931 में गांधी-इरविन समझौते के तहत जेल से रिहा कर दिया गया।

महात्मा गांधी का प्रभाव

कैदी के रूप में बिताए गए दिनों का देवी लाल के मन पर दूरगामी असर पड़ा। भगत सिंह, बी.के. दत्त, राजगुरु और सुखदेव जैसे युवा क्रान्तिकारियों की देश भक्ति, अदम्य साहस, दृढ़ निश्चय तथा उनके द्वारा दिए गए सर्वोच्च बलिदान ने उन्हें झकझोर दिया था। परन्तु वे स्वतन्त्रता प्राप्ति के महात्मा गांधी के सत्याग्रह और अहिंसा के सिद्धान्तों और तरीकों पर ही अडिग रहे। गांधीवादी दर्शन में उनकी जीवन भर दृढ़ आस्था रही। जेल से छूटने के तुरन्त बाद देवी लाल पैतृक स्थान चौटाला पहुंचे और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की गतिविधियों के साथ सक्रिय रूप से जुड़ गए। वे पास के गांवों में घूमे और लोगों को कांग्रेस के विभिन्न कार्यक्रमों में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कांग्रेस मंच से गरीब काश्तकारों की समस्याओं को भी उठाया। तत्कालीन शासकों ने काश्तकारों को उकसाने का आरोप लगाते हुए उन्हें 1933 में गिरफ्तार कर लिया लेकिन पर्याप्त साक्ष्य के अभाव में उन्हें शीघ्र ही छोड़ना पड़ा। अपनी रिहाई के बाद देवी लाल ने काश्तकारों, छोटे किसानों और भूमिहीन मजदूरों को संगठित करने की अपनी गतिविधियां पुनः प्रारम्भ कर दीं। उन्होंने 1937 के पंजाब के प्रांतीय परिषद के चुनावों में भी सक्रिय रूप से भाग लिया। कांग्रेस ने हिसार-उत्तर (ग्रामीण) क्षेत्र से कोई उम्मीदवार खड़ा नहीं किया इसलिए उन्होंने आजाद उम्मीदवार आत्माराम के लिए प्रचार किया जो उस चुनाव में विजयी रहे। उस समय तक कांग्रेस के एक उभरते नेता के रूप में उनकी ख्याति दूर-दूर तक फैल गयी थी।

भारत छोड़ो आन्दोलन और देवी लाल

अगस्त, 1942 में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने विदेशी शासकों को "भारत छोड़ो" का अल्टीमेटम दिया और "करो या मरो" का नारा दिया। पूरे देश में माहौल एक दम गर्म हो उठा। गांधी जी का आह्वान लोगों को झकझोरने के लिए था कि अंग्रेजों को भारत छोड़ना होगा या फिर हमें अपनी मातृभूमि की आजादी के लिए अपने जीवन की आहुति देनी होगी। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सभी बड़े नेताओं, जिनमें महात्मा गांधी भी शामिल थे, बंदी बना लिया गया और जेल भेज दिया गया। कांग्रेस की गतिविधियों पर प्रतिबंध लगा दिया गया। बड़े नेताओं की अनुपस्थिति में छात्रों, मजदूरों और किसानों ने आन्दोलन का भार संभाला। अंग्रेजी प्रशासन ने गोलियां चलाकर और उन्हें बंदी बनाकर आन्दोलन को दबाने की कोशिश की परन्तु भारत छोड़ो आन्दोलन एक जन आन्दोलन बन गया।

कई अन्य नेताओं की तरह देवी लाल भूमिगत हो गए और वहां से आन्दोलन का संचालन करने लगे। स्थानीय प्रशासन ने देवी लाल को गिरफ्तार करने का भरसक प्रयास किया। प्रशासन ने उनके परिवारजनों और रिश्तेदारों को तंग करना शुरू कर दिया और कुछ समय उपरान्त देवी लाल ने ऐसे हालात में 5 अक्तूबर, 1942 को अपने गांव में गिरफ्तारी देना उचित समझा। उन पर मुकदमा चलाया गया और उन्हें एक वर्ष के सश्रम कारावास की सजा दी गई। पहले उन्हें हिसार जिला जेल में भेजा गया और बाद में सैंट्रल जेल मुल्तान स्थानांतरित कर दिया गया जहां वे अपनी रिहाई, अक्तूबर, 1943 तक रहे।

किसान आन्दोलन

अक्तूबर, 1943 में अपनी रिहाई के पश्चात् देवी लाल चौटाला आए और वहां उन्होंने किसानों और मजदूरों की भलाई के लिए अपना अभियान शुरू कर दिया। उन्होंने छोटे किसानों, काश्तकारों और भूमिहीन मजदूरों को इकट्ठा किया जिनकी हालत द्वितीय विश्व युद्ध के दुष्परिणामों तथा बड़े जमींदारों के शोषण के कारण बड़ी दयनीय हो चुकी थी। जमींदारों और काश्तकारों के बीच संघर्ष तेज हो गया। अन्य बातों के साथ-साथ जमींदारी प्रथा का उन्मूलन, काश्तकारों के अधिकारों की रक्षा और भूमि राजस्व में छूट जैसी किसानों की मांगों को देवी लाल ने यूनियनिस्ट पार्टी के सदस्य श्री छोटू राम को भेजा ताकि ये मांगें पंजाब प्रान्तीय असेम्बली में उठाई जा सकें। दुर्भाग्यवश जनवरी, 1945 में छोटू राम का निधन हो गया। देवी लाल के अनुरोध पर चौधरी साहब राम लाहौर में पंडित जवाहर लाल नेहरू से मिले और

उन्हें इन मांगों को लागू करने के लिए तुरन्त कार्यवाही करने की आवश्यकता के लिए प्रेरित किया। पंडित नेहरू ने इस मामले को पंजाब प्रान्तीय कांग्रेस समिति को प्रेषित किया। इसके परिणामस्वरूप पंजाब सरकार ने सिरसा क्षेत्र में स्थिति में सुधार लाने के लिए उपाय सुझाने हेतु एक वित्त आयुक्त को वहां भेजा। देवी लाल और अन्य नेताओं ने वित्त आयुक्त के सामने काश्तकारों के अधिकारों का मामला रखा। दिसम्बर, 1948 में किसानों ने रोहिरनवाली, सिरसा में एक किसान सम्मेलन आयोजित किया और देवी लाल उसके संयोजक बने। बाद में, इस मामले पर विचार करने के लिए ईस्ट पंजाब लैंड रिफार्म्स कमेटी (पूर्वी पंजाब भूमि सुधार समिति) का गठन किया गया और पंजाब सरकार ने 1950 में दि पंजाब टेनेन्टस् (सिक्योरिटी आफ टेनियोर) आर्डिनेन्स जारी किया और सन् 1953 में पंजाब सिक्योरिटी आफ लैंड टेनियोर एक्ट पारित किया गया। बाद में चौधरी देवी लाल आचार्य विनोबा भावे और जय प्रकाश नारायण द्वारा शुरू किए गए सर्वोदय आन्दोलन में भी शामिल हुए और हिसार में पद यात्रा में भाग लिया। उन्होंने भूदान में अपनी कुछ जमीन भी दान में दी।

जनप्रतिनिधि के रूप में

सन् 1952 में प्रथम आम चुनाव हुए। उस समय तक देवी लाल एक सशक्त स्थानीय कांग्रेसी नेता के रूप में उभर चुके थे। कांग्रेस पार्टी ने उन्हें सिरसा असेम्बली निर्वाचन क्षेत्र से उम्मीदवार बनाया और उन्होंने अपना पहला चुनाव भारी बहुमत से जीता। सन् 1957 में जब दूसरा आम चुनाव आया तब तक चौधरी देवी लाल ग्रामीण जनता में बहुत लोकप्रिय हो चुके थे। फिर भी उन्होंने चुनाव नहीं लड़ा और ग्रामीण इलाकों में कांग्रेस पार्टी के लिए काम करने और प्रचार को तरजीह दी। एक संगठनकर्ता के रूप में उनकी क्षमता के परिणामस्वरूप वे पार्टी हाई कमान के विरोध के बावजूद 1958 में पंजाब प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष निर्वाचित हुए। किन्तु उन्होंने बाद में पंजाब प्रदेश कांग्रेस कमेटी के उपाध्यक्ष पद पर बने रहने का निर्णय लिया। उन्होंने 1959 में डबवाली निर्वाचन क्षेत्र से कांग्रेस उम्मीदवार के रूप में उप चुनाव लड़ा और भारी अन्तर से विजयी हुए। उन्हें पंजाब विधान सभा में कांग्रेस विधानमंडल दल का मुख्य सचेतक नियुक्त किया गया।

भ्रष्टाचार के विरुद्ध अभियान

सातवें दशक के प्रारंभ में चौधरी देवी लाल ने दो प्रमुख मुद्दों के लिए अनवरत अभियान चलाया: एक, भ्रष्टाचार के विरुद्ध अभियान और दूसरा, हरियाणा को पंजाब

से पृथक करना। इसी दौरान उन्होंने अपेक्षित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए वर्ष 1962 में कांग्रेस छोड़ दी। उन्होंने उच्च पदों पर भ्रष्टाचार के विरुद्ध आवाज उठाई और पंजाब के तत्कालीन मुख्य मंत्री सरदार प्रताप सिंह कैरों के विरुद्ध जांच आयोग गठित करने की मांग की। दृढ़ संकल्प के साथ उन्होंने जनता को एकजुट किया और मुख्य मंत्री के विरुद्ध जांच आयोग गठित करने के लिए केन्द्र सरकार पर दबाव बनाया। जुलाई, 1963 में चौधरी देवी लाल ने भारत के राष्ट्रपति को एक विस्तृत ज्ञापन प्रस्तुत किया। केन्द्र सरकार ने सरदार प्रताप सिंह कैरों के विरुद्ध लगाये गए आरोपों की जांच करने के लिए भारत के पूर्व मुख्य न्यायाधीश श्री सुधीर रंजन दास की अध्यक्षता में एक जांच आयोग का गठन किया। सरदार कैरों भ्रष्टाचार के लिए दोषी पाए गए और उन्हें अपना पद छोड़ना पड़ा। चौधरी देवी लाल द्वारा भ्रष्टाचार के विरुद्ध चलाया गया यह पहला प्रमुख सफल अभियान था।

हरियाणा राज्य का गठन

चौधरी देवी लाल का एक महत्वपूर्ण योगदान पृथक हरियाणा राज्य बनाने के लिए उनका सतत् प्रयास था। राज्य पुनर्गठन आयोग, 1955 को विभिन्न संगठनों से भारी संख्या में ज्ञापन प्राप्त हुए जिनमें तत्कालीन पंजाब के हिंदी भाषी क्षेत्रों और अन्य आस-पास के राज्यों के कुछ हिन्दी भाषी क्षेत्रों को शामिल करके पृथक हरियाणा राज्य बनाने की मांग की गई थी परन्तु आयोग ने पंजाब से हरियाणा को अलग किए जाने संबंधी मुद्दे पर कोई विचार प्रकट नहीं किया। श्री देवी लाल आयोग के समक्ष उपस्थित हुए और उन्होंने आग्रह किया कि सिंचित भूमि, उर्वरक वितरण, विद्युतीकरण कार्यक्रम और समग्र संतुलित विकास की दृष्टि से दोनों क्षेत्रों में विकास संबंधी भारी असमानता है। उन्होंने पंजाब के हिन्दी भाषी क्षेत्रों को शामिल करके एक पृथक राज्य, हरियाणा के गठन पर बल दिया। उन्होंने हरियाणा लोक समिति का गठन किया जिसने एक पृथक राज्य के गठन के लिए आंदोलन का नेतृत्व किया। 3 अक्तूबर, 1965 को एक सम्मेलन बुलाया गया जिसमें हरियाणा के अनेक नेताओं ने अपनी राजनीतिक संबद्धता भिन्न होते हुए भी भाग लिया और पृथक हरियाणा राज्य के गठन की मांग की। इस सम्मेलन में 21 सदस्यीय एक समिति गठित की गई और श्री देवी लाल को इसका संयोजक बनाया गया और इस समिति को अपनी मांग मनवाने के लिए नीति बनाने का कार्य सौंपा गया। पंजाबी सूबा की मांग संबंधी संसदीय सलाहकार समिति ने 1966 में अपने प्रतिवेदन में सिफारिश की थी कि यह इन क्षेत्रों की जनता और पूरे राष्ट्र के समग्र हित में है कि पंजाब राज्य का भाषा के आधार पर पुनर्गठन किया जाए और हरियाणा राज्य बनाया जाए। भारत सरकार ने संसदीय समिति के

प्रतिवेदन में किए गए प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया और आवश्यक सीमा समायोजन के लिए विशेषज्ञों के एक आयोग का गठन किया। आयोग की सिफारिश के आधार पर 1 नवम्बर, 1966 को हरियाणा अस्तित्व में आया और भारत संघ का 17वां राज्य बना।

कांग्रेस में पुन: प्रवेश और कांग्रेस छोड़ना

हरियाणा राज्य में चौधरी देवी लाल की बढ़ती लोकप्रियता को देखते हुए कांग्रेस के तत्कालीन अध्यक्ष श्री के. कामराज और तत्कालीन प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने श्री देवी लाल से कांग्रेस में पुन: शामिल होने की अपील की। श्री देवी लाल इस आशा के साथ अपने समर्थकों को लेकर कांग्रेस में शामिल हो गए कि कांग्रेस हरियाणा के सर्वांगीण विकास में सहायता करेगी। उन्होंने 19 फरवरी, 1967 को हरियाणा में हुए पहले आम चुनाव के लिए जोरदार ढंग से प्रचार किया और कांग्रेस पूर्ण बहुमत से विजयी हुई। हरियाणा राज्य के गठन के लिए उनके अनवरत संघर्ष के दौरान उन्होंने 1967 के चुनावों में चुनाव न लड़ने की प्रतिज्ञा की थी और उन्होंने अपनी इस प्रतिज्ञा को पूरा किया। पंडित भगवत दयाल शर्मा एक बार फिर मुख्य मंत्री बने लेकिन केवल 13 दिन में उनकी सरकार गिर गई। हरियाणा में अस्थिरता और दल-बदल का एक नया दौर शुरू हुआ जिसके परिणामस्वरूप 1968 में हरियाणा विधान सभा के मध्यावधि चुनाव हुए। चौधरी देवी लाल ने घोषणा की कि वह चुनाव नहीं लड़ेंगे और युवा नेताओं को अवसर दिया जाएगा। उनकी त्याग की इस भावना का पूरे हरियाणा में स्वागत किया गया। चुनावों के पश्चात् उन्होंने श्री बंसी लाल को हरियाणा का मुख्य मंत्री बनाने में मुख्य भूमिका अदा की। हरियाणा के प्रति उनकी सेवाओं को देखते हुए श्री देवी लाल को 1968 में खादी उद्योग बोर्ड का अध्यक्ष नियुक्त किया गया और 1970 तक वह इस पद पर रहे।

1971 में चौधरी देवी लाल ने पुन: कांग्रेस छोड़ दी और चौधरी चरण सिंह के नेतृत्व वाले भारतीय क्रांति दल में शामिल हो गए। उन्होंने सरकार की किसान विरोधी नीतियों का विरोध करने के लिए किसान संघर्ष समिति का गठन किया। उन्होंने विभिन्न स्थानों, विशेष रूप से गांवों में अनेक बैठकों का आयोजन किया। 1973 में उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और पहले सिरसा जेल और फिर अम्बाला जेल में भेजा गया। उन्हें पंजाब और हरियाणा उच्च न्यायालय के आदेश पर 4 अक्तूबर, 1973 को रिहा किया गया। इस दौरान लगभग सभी विपक्षी दलों ने श्री देवी लाल के साथ एकजुटता दिखाई। इसके परिणामस्वरूप 1974 में उन्होंने संयुक्त विपक्ष के उम्मीदवार

के रूप में रोड़ी विधान सभा निर्वाचन क्षेत्र से चुनाव लड़ा और कांग्रेस उम्मीदवार को पराजित करके विजयी हुए। चुनाव के पश्चात् वह भारतीय लोक दल की हरियाणा इकाई के अध्यक्ष बने।

हरियाणा के मुख्य मंत्री के रूप में

चौधरी देवी लाल ने हरियाणा के मुख्य मंत्री के पद को दो बार सुशोभित किया। राजनैतिक अस्थिरता के दौर के पश्चात् वह 1977 में पहली बार हरियाणा के मुख्य मंत्री बने। 25 जून, 1975 को राष्ट्रीय आपातकाल की घोषणा के बाद विपक्ष के अनेक नेताओं को आंतरिक सुरक्षा अधिनियम (मीसा) के अंतर्गत गिरफ्तार कर लिया गया। श्री देवी लाल को भी 'मीसा' के अंतर्गत गिरफ्तार कर लिया गया और 28 जनवरी, 1977 को उन्हें रिहा किया गया। आपातकाल के बाद प्रमुख विपक्षी दल इकट्ठे हुए और उन्होंने जनता पार्टी का गठन किया। जनता पार्टी के गठन में उनकी प्रमुख भूमिका रही। उन्होंने अपने चुनाव अभियान में बड़ी मुस्तैदी से हरियाणा, राजस्थान और उत्तर प्रदेश का दौरा किया। जनता पार्टी लोक सभा चुनावों में न केवल हरियाणा बल्कि समूचे उत्तरी भारत में विजयी रही। केन्द्र में जनता पार्टी की सरकार बनने के तुरंत बाद ही जून 1977 में हरियाणा विधान सभा के चुनाव हुए। देवी लाल ने विधान सभा का चुनाव लड़ा और पूर्ण बहुमत लेकर विजयी हुए।

चौधरी देवी लाल सर्वसम्मति से हरियाणा विधान सभा में जनता पार्टी के नेता चुने गए और 21 जून, 1977 को पहली बार हरियाणा के मुख्य मंत्री बने। हरियाणा विधान सभा में जनता पार्टी का नेता चुने जाने पर उन्होंने कहा "विकास का बीड़ा गरीबों की झोपड़ियों से उठाया जाना चाहिए न कि चंडीगढ़ में सचिवालय के ऊंचे भवन से।"

4 जुलाई, 1977 को उनकी सरकार के एक द्वि-सूत्री कार्यक्रम की घोषणा हुई ताकि हरियाणा के सामाजिक-आर्थिक विकास को गति मिल सके। इन कार्यक्रमों में उच्च स्तर पर व्याप्त भ्रष्टाचार को मिटाना और पानी तथा बिजली की व्यवस्था करना शामिल था। देवी लाल ने अपने पार्टी के घोषणापत्र को लागू करने तथा उन वायदों को पूरा करने की भरसक कोशिश की जो उन्होंने विधान सभा के चुनाव अभियान की अगुआई करते हुए किये थे। उन्होंने बजट में कृषि, पशुपालन, लघु एवं कुटीर उद्योगों तथा ग्रामीण क्षेत्रों के समग्र विकास के लिए बनाई गई अन्य योजनाओं के लिए आवंटन में वृद्धि की। उन्होंने कई स्व-रोज़गार और कल्याण योजनाएं लागू कीं। ये सभी कदम कल्याण संबंधी कार्यकलापों और जनतंत्र के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाते हैं।

एक किसान नेता

23 दिसम्बर, 1978 को चौधरी चरण सिंह के जन्म दिवस पर एक विशाल किसान रैली आयोजित की गई। देवी लाल ने किसान रैली में बढ़-चढ़कर भाग लिया। वह रैली में भाग न लेने के लिए विभिन्न तबकों से पड़े दबाव को यह कहकर झेल गए कि "मैं पहले एक किसान का बेटा हूं मुख्य मंत्री बाद में।" बाद में उन्हें हरियाणा के मुख्य मंत्री की कुर्सी छोड़नी पड़ी क्योंकि वह किसानों के हक के लिए संघर्ष करने लगे थे और उन्होंने चौधरी चरण सिंह से हाथ मिला लिया था।

संसद में

चौधरी देवी लाल की काम करने की शैली अनूठी थी। उनका व्यक्तित्व रोबदार था। उन्हें आम आदमी के दिल पर राज करने की कला आती थी। उन्होंने बड़ी दृढ़ता से मुद्दों का चयन किया और लक्ष्य प्राप्ति के लिए बड़ी मुस्तैदी से अभियान चलाया। 1979 में जनता पार्टी टूटने से देवी लाल ने चौधरी चरण सिंह से हाथ मिला लिया और जनता पार्टी (सेक्युलर) बनाई। बाद में इसे लोक दल नाम दिया गया। जब 1980 में सातवीं लोक सभा के लिए मध्यावधि चुनाव हुए तो देवी लाल ने सोनीपत संसदीय क्षेत्र से चुनाव लड़ा और पहली बार लोक सभा के लिए निर्वाचित हुए। उन्होंने सभा में सतलुज-यमुना सम्पर्क नहर मुद्दा और किसानों से जुड़े अन्य कल्याणकारी मुद्दे उठाए। उन्होंने रावी-ब्यास सम्पर्क नहर को शीघ्र पूरा करने की मांग भी की। परन्तु इस लोक सभा का कार्यकाल बहुत कम रहा। 1982 में जब हरियाणा विधान सभा के चुनाव हुए तो देवी लाल ने महम विधान सभा निर्वाचन क्षेत्र से चुनाव लड़ा और विजयी हुए। परन्तु उन्होंने सातवीं लोक सभा की सदस्यता से त्यागपत्र देकर हरियाणा के लोगों की सेवा करना पसंद किया।

एक राष्ट्रीय नेता के रूप में आविर्भाव

दिसम्बर, 1984 में कांग्रेस पार्टी को संसदीय चुनाव में भारी जनादेश प्राप्त हुआ। इसलिए कांग्रेस के वर्चस्व को चुनौती देना बहुत मुश्किल था। परन्तु देवी लाल ने 1985 के राजीव गांधी-लौंगोवाल समझौते का विशेष रूप से चंडीगढ़ पंजाब को हस्तांतरित करने का विरोध किया और इसे हरियाणा के प्रति अन्याय की संज्ञा दी। उन्होंने इसके विरुद्ध एक व्यापक अभियान 'न्याय युद्ध' छेड़ा। उन्होंने *रास्ता रोको* अभियान भी चलाया जो पूरे हरियाणा में फैल गया। 1987 के विधान सभा चुनावों में चौधरी देवी लाल ने आश्चर्यजनक सफलता हासिल करते हुए 90 में से 85 सीटें

जीती। वह 20 जून, 1987 को दूसरी बार हरियाणा के मुख्य मंत्री बने। इससे देश भर में विपक्ष में एकजुटता की भावना उभरी जिसके फलस्वरूप विपक्षी दल एकजुट हुए और पहले जनता दल का गठन हुआ और बाद में 1989 में राष्ट्रीय मोर्चा बना।

उप-प्रधान मंत्री के पद तक पहुंचना

वर्ष 1987-91 का काल चौधरी देवी लाल के लिए विविध घटनाओं से भरा रहा। 1987 में वह न केवल हरियाणा के मुख्य मंत्री बने बल्कि वह राष्ट्रीय स्तर पर किसानों के सर्वमान्य नेता के रूप में उभरे। अपने मुख्यमंत्रित्व काल (1987-89) में उन्होंने राज्य के विकास के लिए कुछ क्रांतिकारी कदम उठाए। इन उपायों में अन्यों के साथ-साथ 100 रुपये प्रति माह की वृद्धावस्था पेंशन योजना; कर्ज में डूबे किसानों तथा कमजोर वर्गों के 10,000 रुपये तक के ऋण माफ करना; शिक्षित युवाओं के लिए बेरोजगारी भत्ता; किसानों को रियायती दरों पर बिजली देना तथा भ्रष्टाचार रोकने के लिए विशेष कक्ष की स्थापना के उपाय शामिल थे। मुख्य मंत्री के रूप में देवी लाल ने जनता को एकजुट करने के उपाय किए और 1989 के लोक सभा चुनावों में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। उन्होंने अथक चुनाव अभियान के दौरान मतदाता जुटाने के लिए देश भर का दौरा किया। उनके प्रयासों के फलस्वरूप ही नौवीं लोक सभा में राष्ट्रीय मोर्चे को बहुमत हासिल हुआ। उन्होंने स्वयं सीकर (राजस्थान) और रोहतक (हरियाणा) संसदीय निर्वाचन क्षेत्रों से चुनाव लड़ा और दोनों क्षेत्रों से भारी मतों से विजय हासिल की।

1 दिसंबर, 1989 चौधरी देवी लाल के लिए एक यादगार दिन था। राष्ट्रीय मोर्चा के नवनिर्वाचित सदस्यगण अपने नेता का चुनाव करने के लिए संसद के केन्द्रीय कक्ष में मिले। वी.पी. सिंह ने चौधरी देवी लाल के नाम का प्रस्ताव किया और चंद्रशेखर जी ने उसका अनुसमर्थन किया। चौधरी देवी लाल सर्वसम्मति से संसदीय दल के नेता निर्वाचित हुए। परन्तु उन्होंने नवनिर्वाचित प्रतिनिधियों को धन्यवाद देते हुए इस पेशकश को स्वीकार नहीं किया और कहा "मैं हरियाणा में ताऊ कहलाता हूं। यहां भी ताऊ ही रहना चाहता हूं। मैं अपना नाम वापस लेता हूं और माननीय वी.पी. सिंह का नाम तजवीज करता हूं।" इस प्रकार चौधरी देवी लाल ने समकालीन भारतीय इतिहास में अभूतपूर्व बलिदान दिया।

2 दिसम्बर, 1989 को देवी लाल भारत के उप-प्रधान मंत्री बने और उन्हें अपने मनपसंद विभाग कृषि और पर्यटन दिए गए। वी.पी. सिंह को अवसर देने के लिए उनकी बहुत प्रशंसा हुई। नवम्बर, 1990 में जब श्री चन्द्रशेखर प्रधान मंत्री बने तो

वह दूसरी बार उप-प्रधान मंत्री बने। इस प्रकार उन्हें दो प्रधान मंत्रियों के अधीन उप-प्रधान मंत्री रहने का अद्वितीय अवसर मिला। उप-प्रधान मंत्री के रूप में उनका कार्यकाल बेशक कम रहा लेकिन साधारण किसान से भारत के उप-प्रधान मंत्री के पद तक पहुंचना उनकी एक बहुत बड़ी उपलब्धि थी। मई 1991 के मध्यावधि चुनावों में वह हार गए। इन चुनावों में हारने के बावजूद वह राजनीति में सक्रिय रहे। उन्होंने दिल्ली में राजघाट से 1992 में ग्रामीण भारत को जगाने और गरीब किसानों के उत्थान के लिए "चेतना यात्रा" प्रारम्भ की। वर्ष 1998 में वह हरियाणा से राज्य सभा के सदस्य बने और 6 अप्रैल, 2001 को निधन होने तक सदस्य रहे।

श्रद्धांजलि

6 अप्रैल, 2001 को चौधरी देवी लाल के निधन पर उनकी राष्ट्र सेवा के लिए भावभीनी श्रद्धांजलियां अर्पित की गईं। उनमें से कुछ अंश नीचे उद्धृत किए गए हैं:—

(एक) सभापति, राज्य सभा: "प्यार से 'ताऊ' के नाम से पुकारे जाने वाले चौधरी देवी लाल का ग्रामीण लोगों के उत्थान के गांधी जी के दर्शन में पक्का विश्वास था। उन्होंने अपना पूरा जीवन किसानों और ग्रामीण लोगों के हित और कल्याण के लिए समर्पित कर दिया। वह एक जन नायक थे और उनके मन में किसानों के हित सदैव सर्वोपरि रहते थे......." (16 अप्रैल, 2001)

(दो) अध्यक्ष, लोक सभा: "चौधरी देवी लाल के दुखद निधन से राष्ट्र ने न केवल एक लोकप्रिय राजनैतिक नेता बल्कि एक सच्चा धरती पुत्र खो दिया है।" (16 अप्रैल, 2001)

(तीन) केन्द्रीय मंत्रिमण्डल द्वारा पारित संकल्प: "वह एक वयोवृद्ध स्वतंत्रता सेनानी, एक अनुभवी सांसद और एक आदरणीय किसान नेता थे। उन्होंने उप-प्रधान मंत्री के रूप में देश की उल्लेखनीय सेवा की ......"

(चार) हरियाणा विधान सभा द्वारा पारित संकल्प: चौधरी देवी लाल के निधन के साथ एक युग का अंत हो गया। उन्होंने जीवन भर दलित वर्ग, लोकतंत्र और पंथनिरपेक्षता के प्रति समर्पित एक लम्बा नि:स्वार्थ संघर्ष किया। उच्च राजकीय पद पर आसीन होते हुए भी वह आम जनता से जुड़े रहे। उनके जीवन का मूल सिद्धान्त यह था कि सत्ता प्राप्ति का उद्देश्य जीवन के सुखों का आनन्द लेना नहीं अपितु जनसामान्य की सेवा करना है।

स्मारक डाक टिकट

चौधरी देवी लाल की सतासीवीं वर्षगांठ के अवसर पर भारत सरकार ने 25 सितम्बर, 2001 को उनकी स्मृति में एक स्मारक डाक टिकट जारी किया।

चौधरी देवी लाल

-चित्रात्मक झांकी-

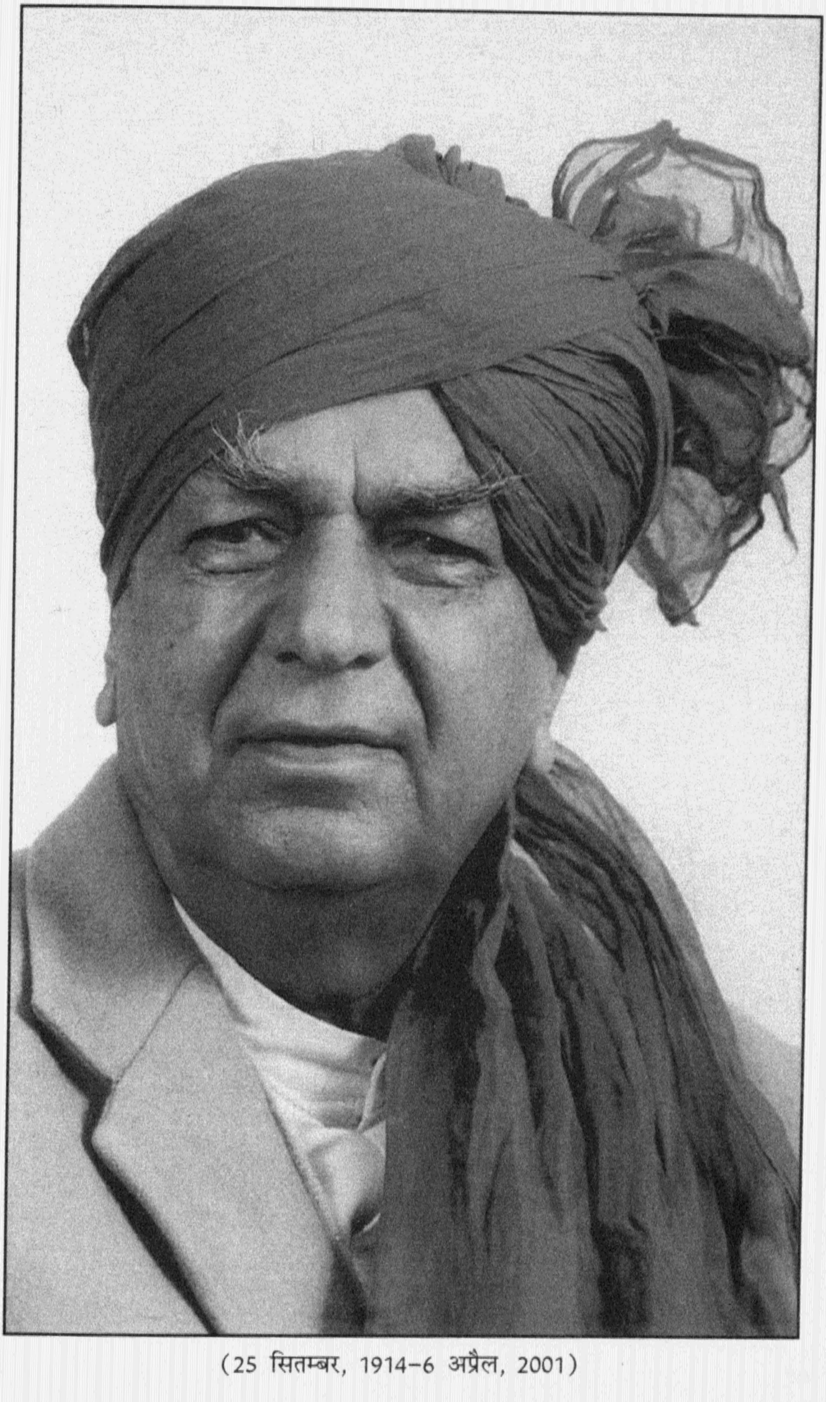

(25 सितम्बर, 1914–6 अप्रैल, 2001)

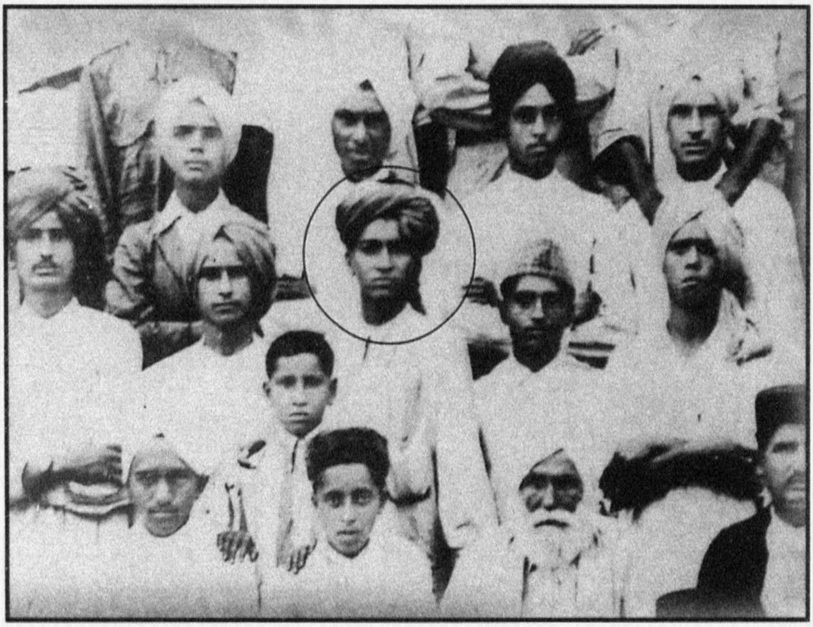

चौधरी देवी लाल (वृत्त के मध्य में)

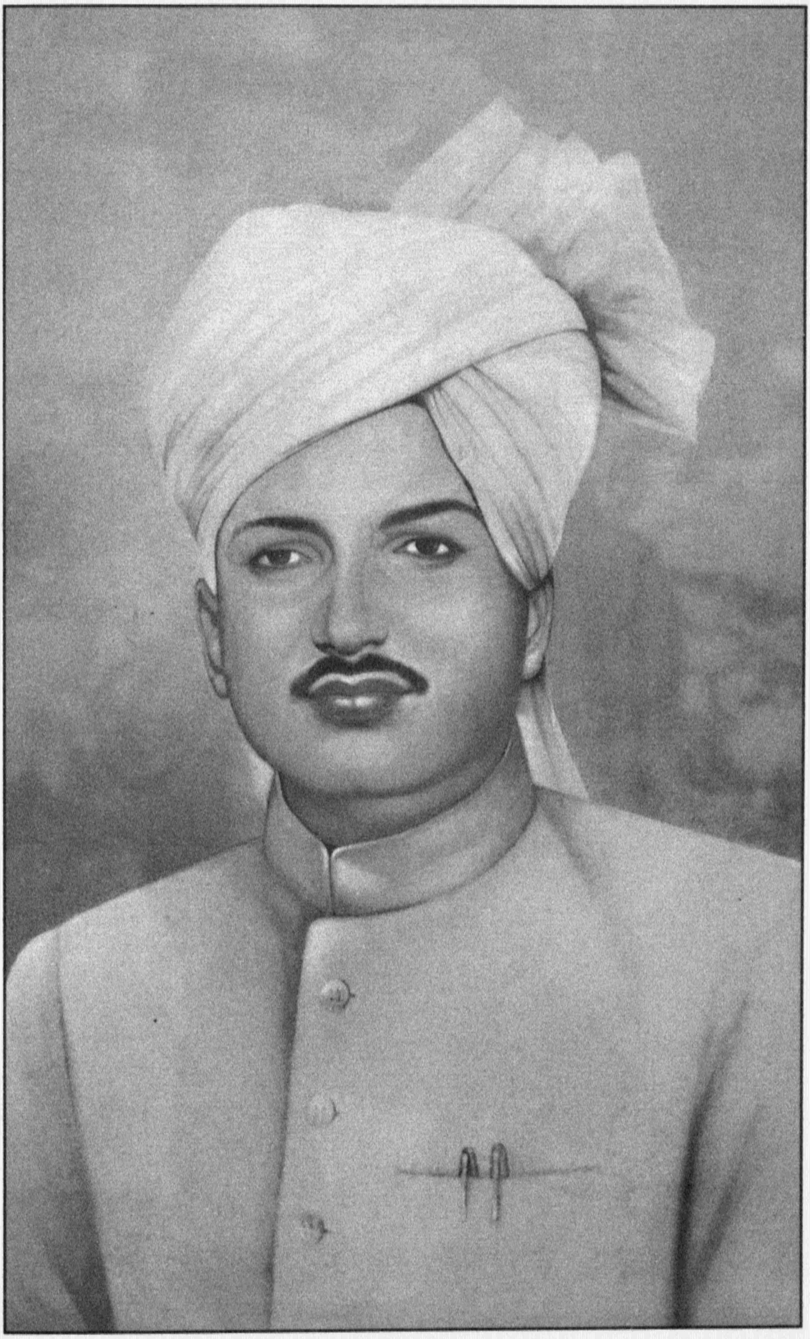

चौधरी देवी लाल युवावस्था में

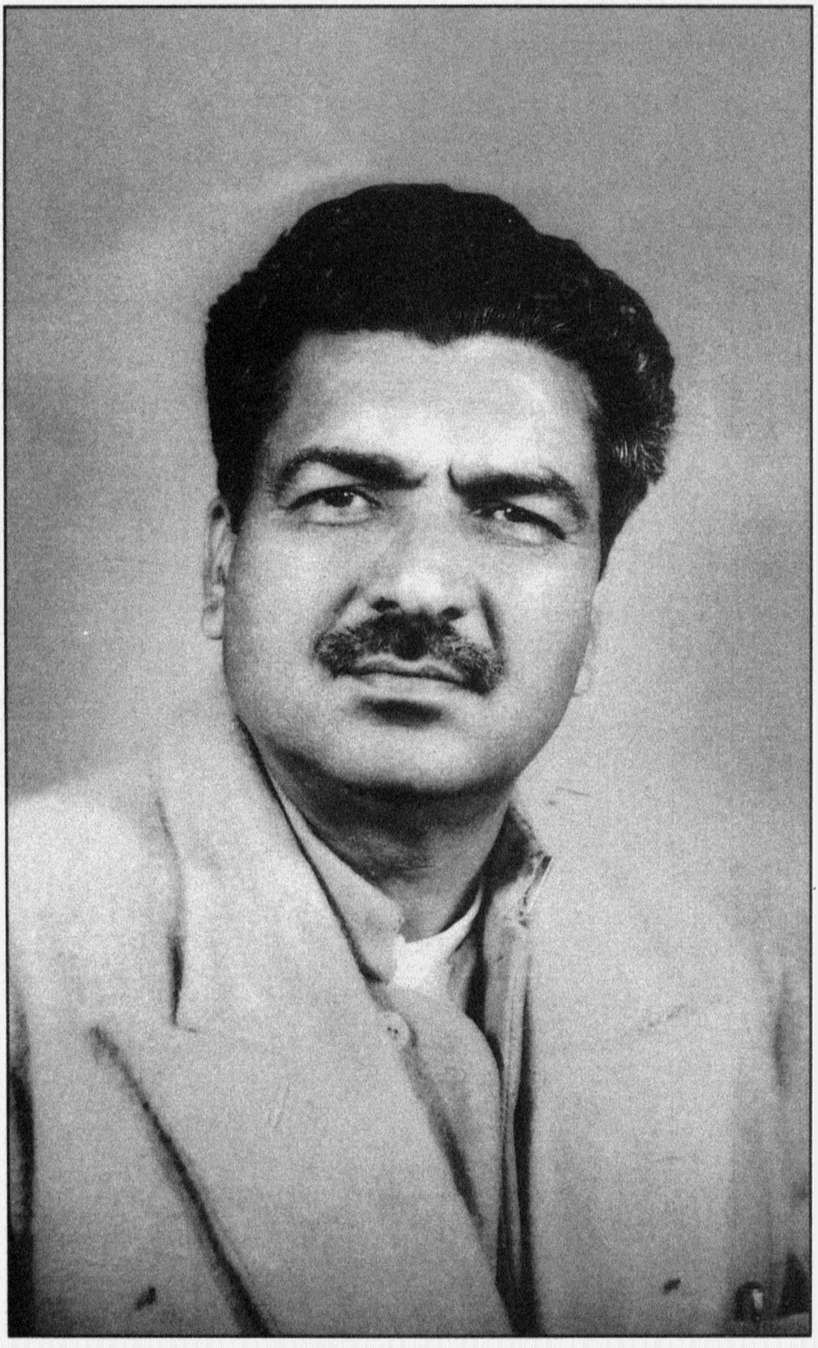

किसान—चौधरी देवी लाल

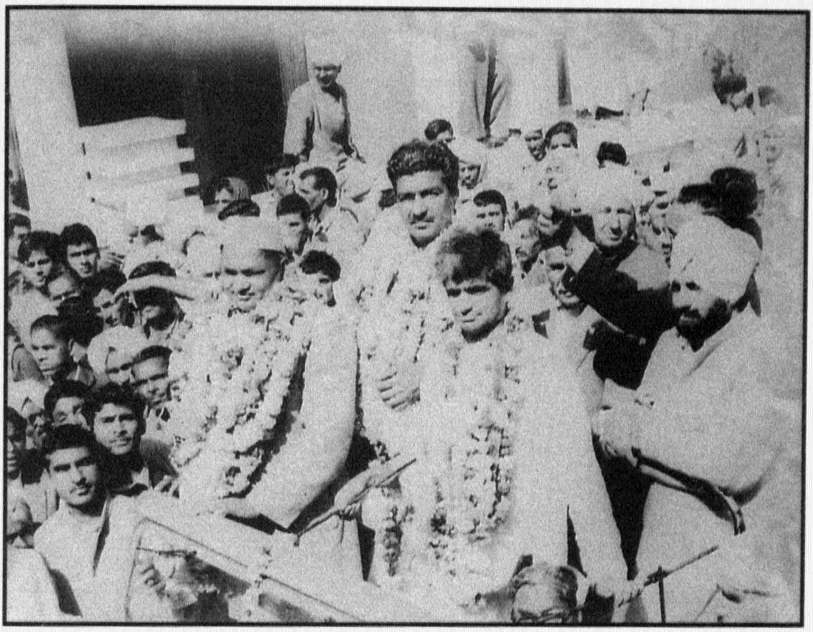

चौधरी देवी लाल सिरसा विधान सभा निर्वाचन क्षेत्र से निर्वाचित होने के बाद फतेहाबाद में विजय जुलूस में भाग लेते हुए

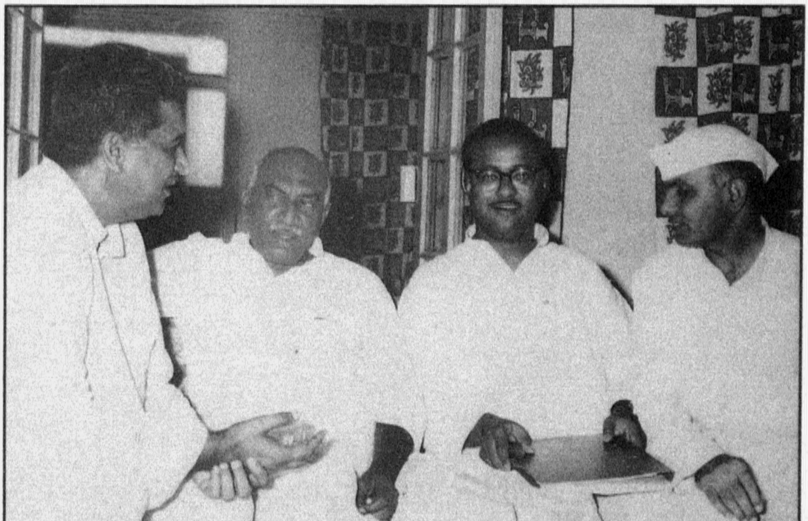

चौधरी देवी लाल (एकदम बायीं ओर) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के तत्कालीन अध्यक्ष श्री के. कामराज के साथ बातचीत करते हुए

विपक्ष के नेताओं के साथ एक बैठक में

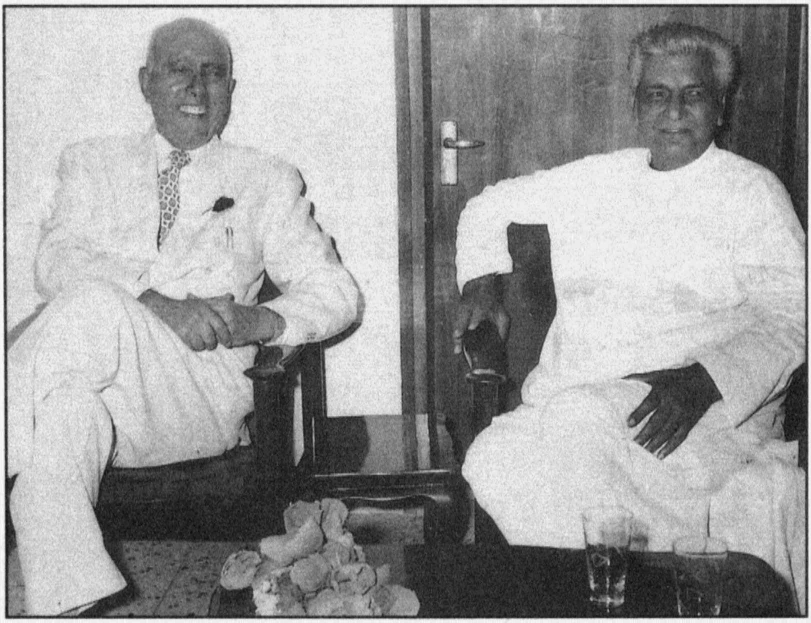

शेख मोहम्मद अब्दुल्ला के साथ

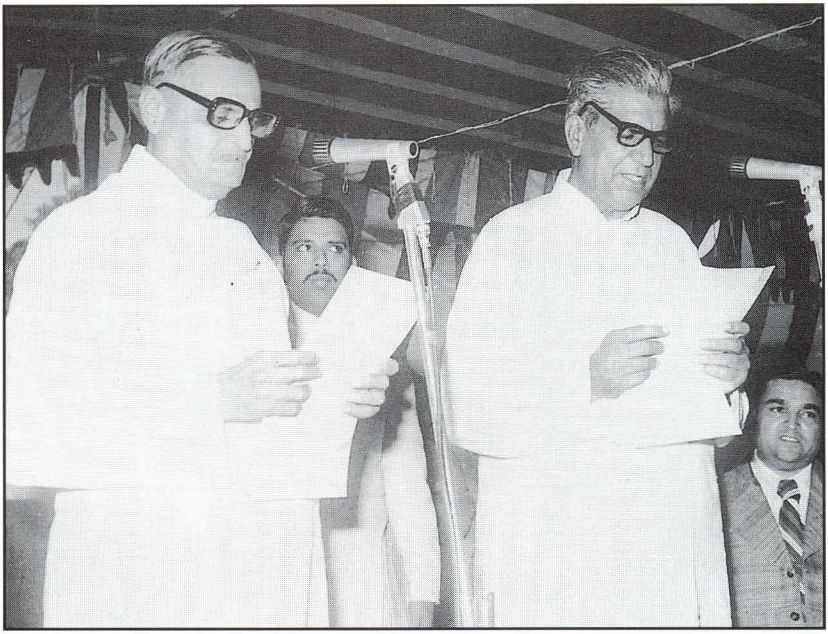

हरियाणा के महामहिम राज्यपाल 1977 में हरियाणा के मुख्य मंत्री
पद की शपथ दिलाते हुए

भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह के साथ। साथ में हैं लोक सभा के भूतपूर्व अध्यक्ष डा. बलराम जाखड़ और पंजाब के भूतपूर्व राज्यपाल श्री एस.एस. रे

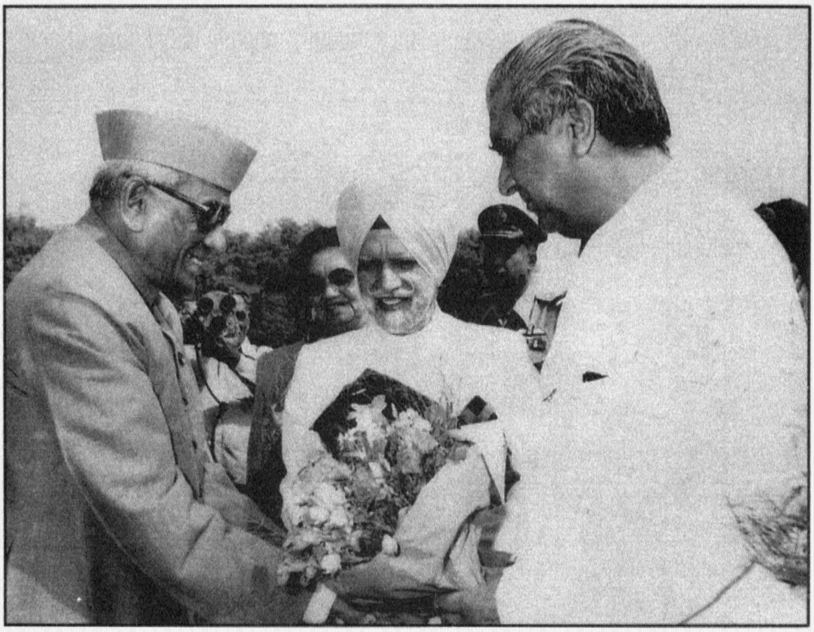

भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति श्री एन. संजीव रेड्डी का स्वागत करते हुए।
साथ में हैं हरियाणा के तत्कालीन राज्यपाल श्री एच.एस. बराड़

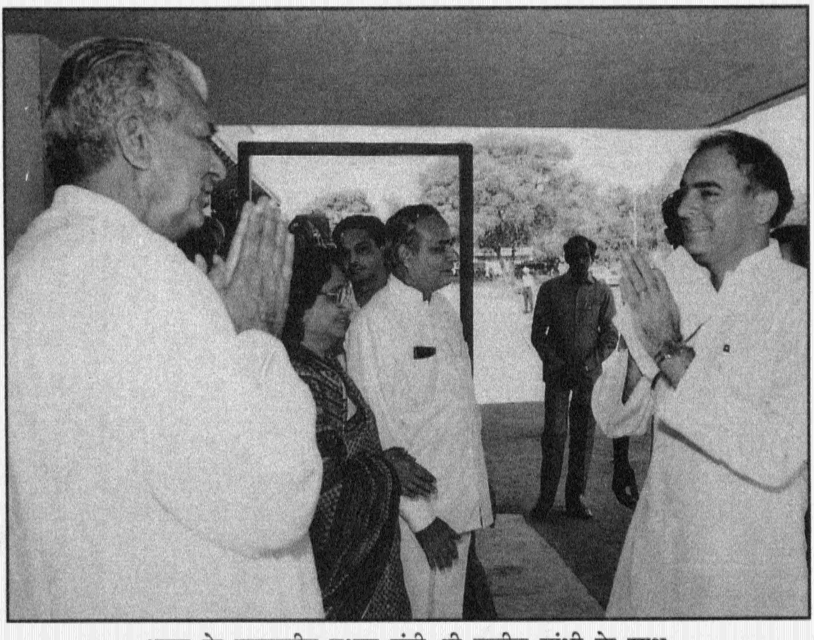

भारत के तत्कालीन प्रधान मंत्री श्री राजीव गांधी के साथ

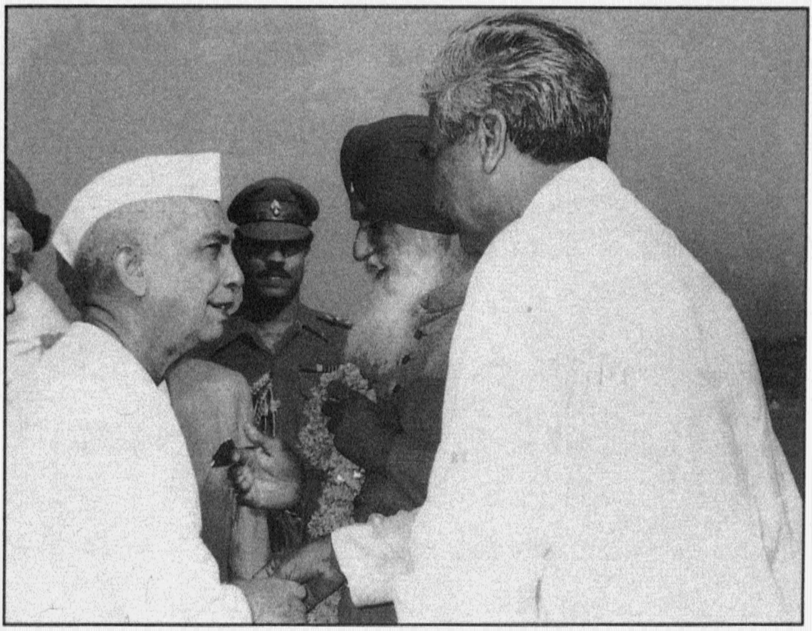

भारत के भूतपूर्व प्रधान मंत्री चौधरी चरण सिंह के साथ बातचीत करते हुए

मुख्य मंत्री चौधरी देवी लाल अमरीका के राष्ट्रपति महामहिम श्री जिम्मी कार्टर और भारत के प्रधान मंत्री श्री मोरारजी आर. देसाई के वर्ष 1978 में हरियाणा के दौरे के दौरान उनका स्वागत करते हुए

एक राजनैतिक रैली में भूतपूर्व प्रधान मंत्री श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह और तमिलनाडु के भूतपूर्व मुख्य मंत्री तथा द्र.मु.क. के अध्यक्ष श्री एम. करुणानिधि के साथ

नई दिल्ली के बोट क्लब पर एक विशाल रैली को संबोधित करते हुए

भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति श्री आर. वेंकटरामन 2 दिसम्बर, 1989 को
उप-प्रधान मंत्री पद और गोपनीयता की शपथ दिलाते हुए

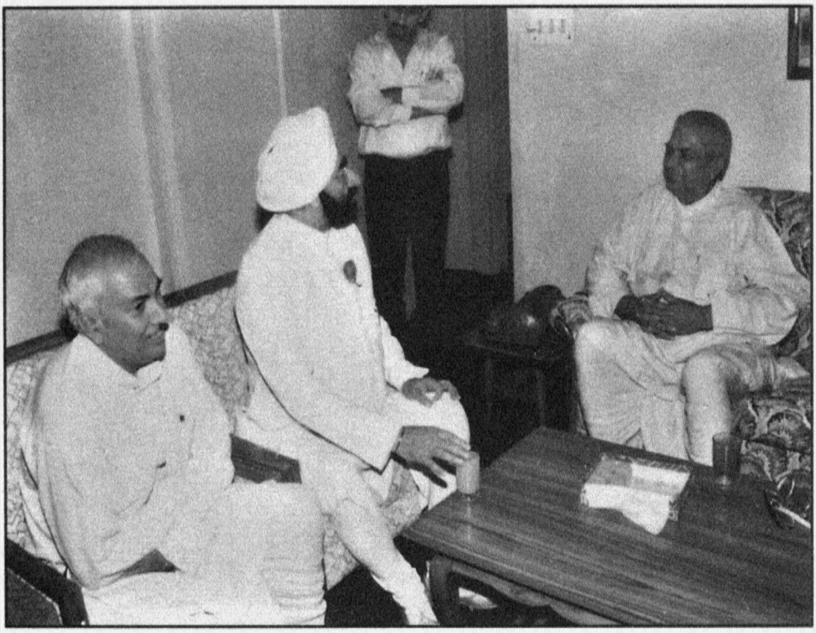

भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह के साथ। साथ में हैं श्री ओम प्रकाश चौटाला

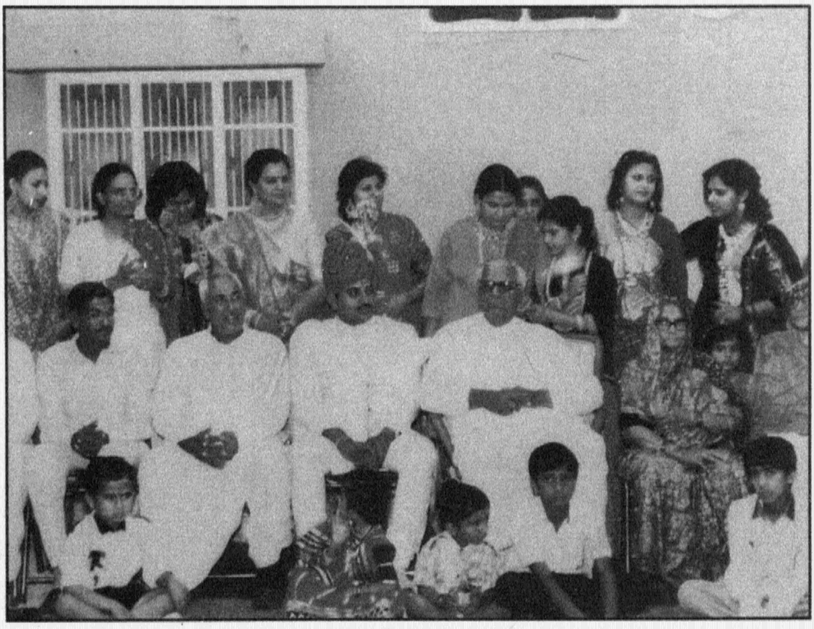

अपने पौत्र अभय सिंह चौटाला के विवाहोत्सव में

भारत के पूर्व प्रधान मंत्री श्री वी.पी. सिंह, आंध्र प्रदेश के तत्कालीन मुख्य मंत्री श्री एन.टी. रामाराव और पूर्व केन्द्रीय मंत्री श्री एच.एन. बहुगुणा के साथ

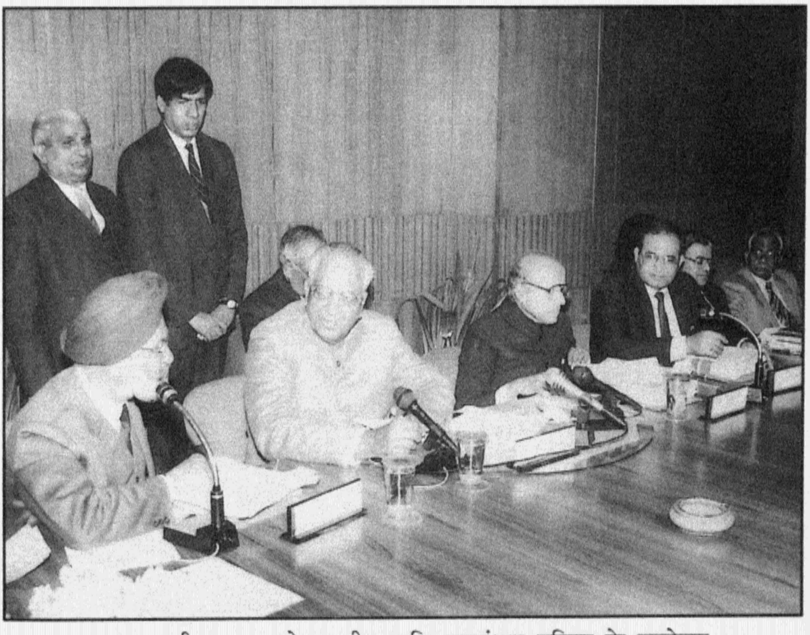

24 जनवरी, 1990 को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के सम्मेलन को संबोधित करते हुए

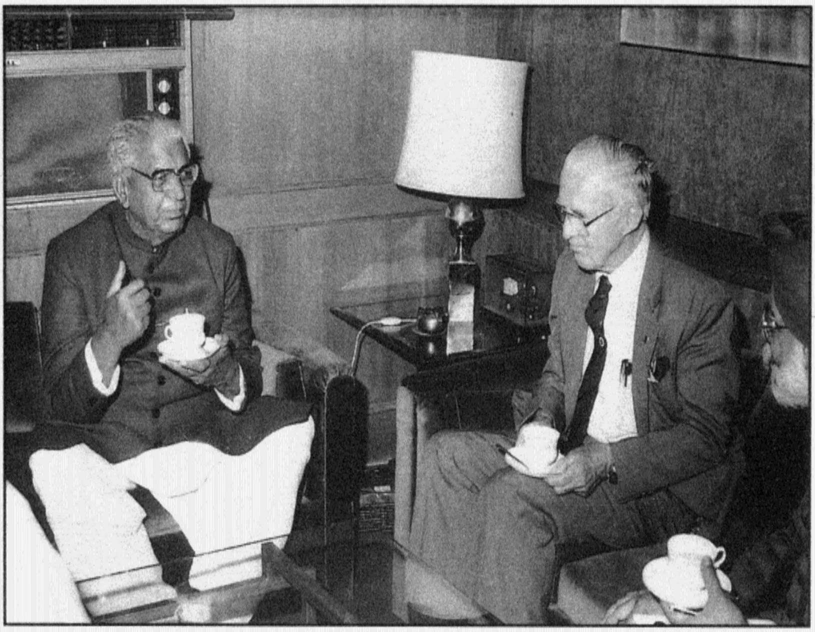
मार्च, 1990 में श्री नॉरमेन बोरलौग के साथ बातचीत करते हुए

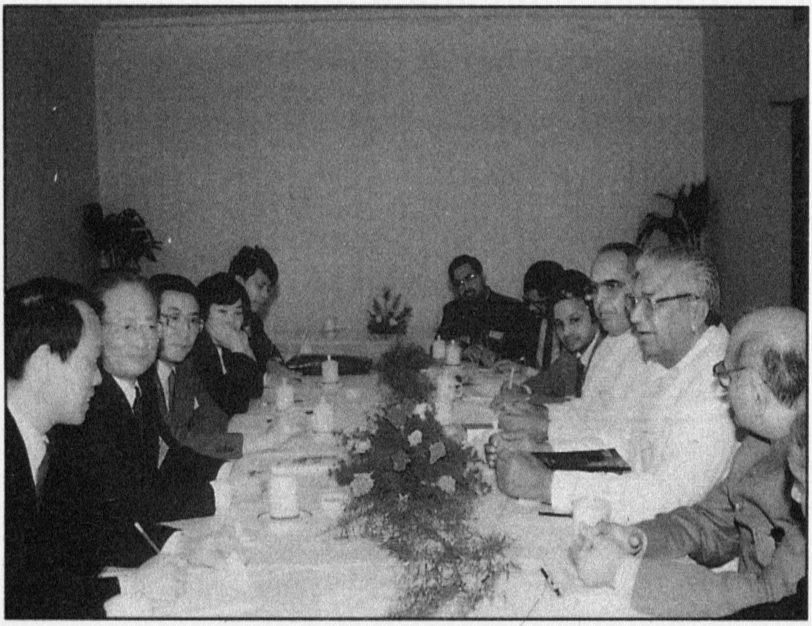
बीजिंग में चीन के नेताओं के साथ बातचीत करते हुए

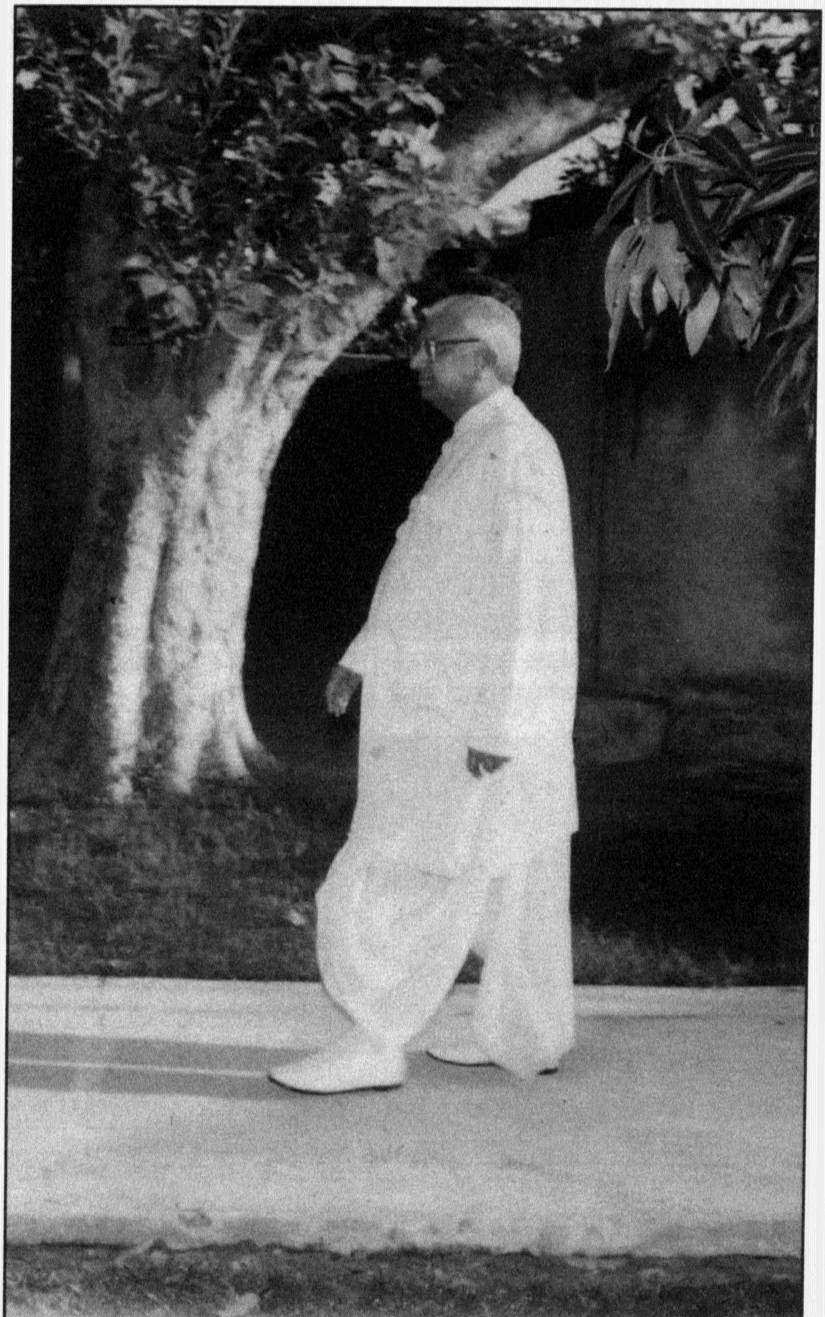

नई दिल्ली में अपने निवास स्थान पर लान में टहलते हुए

भारत के प्रधान मंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी चौधरी देवी लाल के अंतिम दर्शन के अवसर पर श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए

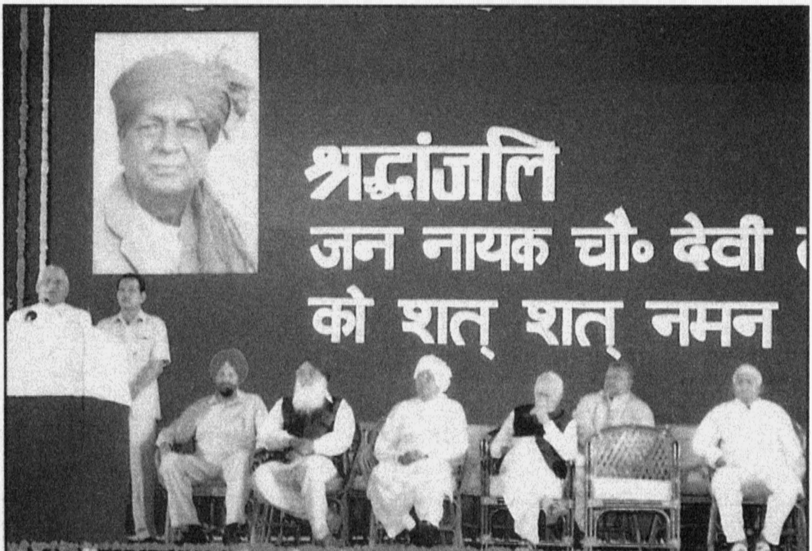

श्रद्धांजलि सभा में भारत के प्रधान मंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी, उप प्रधान मंत्री श्री लाल कृष्ण आडवाणी, हरियाणा के मुख्य मंत्री, श्री ओम प्रकाश चौटाला, पंजाब के पूर्व मुख्य मंत्री श्री प्रकाश सिंह बादल, बिहार के पूर्व मुख्य मंत्री श्री लालू प्रसाद यादव

भारत के उप-राष्ट्रपति श्री भैरो सिंह शेखावत चौधरी देवी लाल को श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए

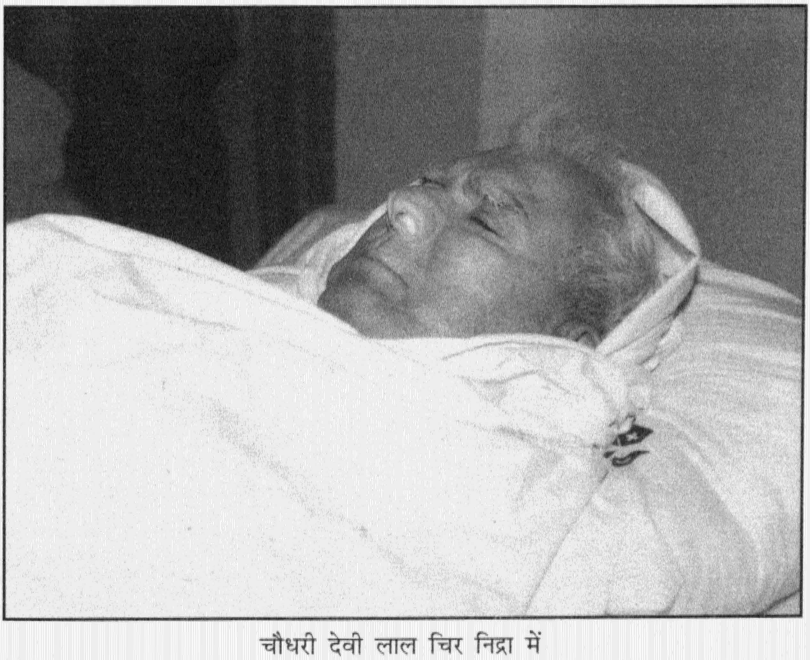

चौधरी देवी लाल चिर निद्रा में